ISSN : 0435-1460

के.हि.सं. गवेषणा

अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान, भाषाशिक्षण तथा साहित्य चिंतन की त्रैमासिक शोध - पत्रिका

अंक-119 : पौष - फाल्गुन, 2076 / जनवरी-मार्च, 2020

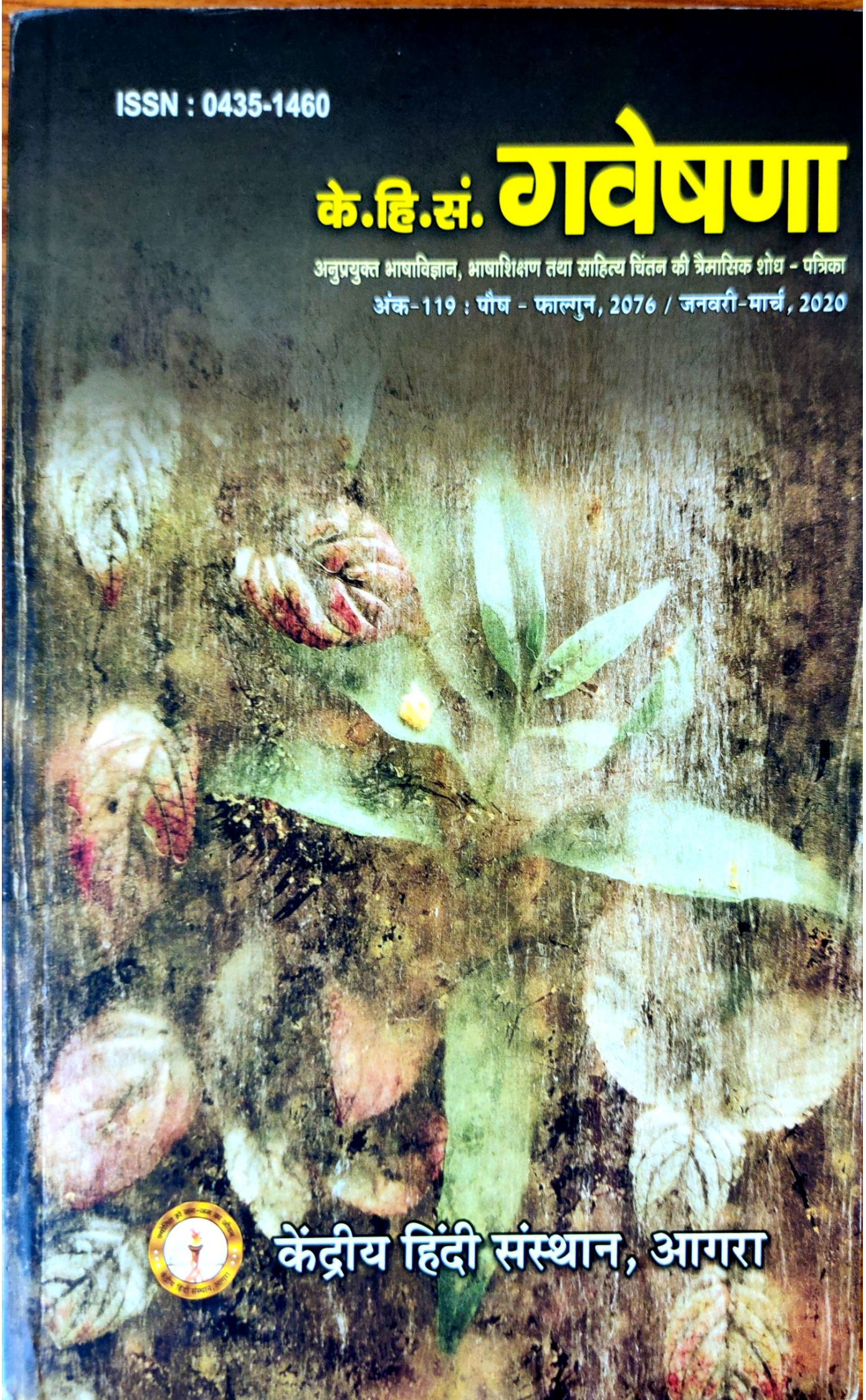

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

ISSN 0435-1460
यू.जी.सी. केयर लिस्ट नं. 25

के.हि.सं. गवेषणा

अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान, भाषा शिक्षण तथा साहित्य-चिंतन की शोध पत्रिका

अंक-119 : पौष-फाल्गुन, 2076/जनवरी-मार्च, 2020

परामर्श मंडल

प्रो. एम. वेंकटेश्वर
पूर्व प्रोफेसर, हिंदी विभाग, अंग्रेजी एवं विदेशी भाषाएँ
विश्वविद्यालय हैदराबाद 500007
ई–मेल : mannar.venkateshwar9@gmail.com

प्रो. उमाशंकर उपाध्याय
पूर्व प्रोफेसर, सावित्री बाई फुले पुणे विश्वविद्यालय,
पुणे, महाराष्ट्र
ई–मेल : usupadhyay@gmail.com

प्रो. रामबख्श मिश्र
पूर्व प्रोफेसर, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय
बनारस, उ.प्र.

प्रो. सुरेश गौतम
पूर्व प्रोफेसर, केंद्रीय हिंदी संस्थान,
आगरा 282005

प्रो. कुमुद शर्मा
प्रोफेसर, हिंदी विभाग, कला संकाय
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली–110007

संरक्षक
डॉ. कमल किशोर गोयनका
उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा
ई–मेल: kkgoyanka@gmail.com

प्रधान संपादक
प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय
निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
ई–मेल: nkpandey65@gmail.com

संपादक
डॉ. ज्योत्स्ना रघुवंशी
विभागाध्यक्ष, अनुसंधान एवं भाषा विकास विभाग
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
ई–मेल: drjyotsnar@gmail.com

अनुसंधान एवं भाषा विकास विभाग

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार
हिंदी संस्थान मार्ग, आगरा – 282005
दूरभाष : 0562-2530683/684/705

अनुक्रम

प्रधान संपादक की कलम से...

भलि मरवणरी बात/ **प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय** 5–10

संपादकीय/ **डॉ. ज्योत्स्ना रघुवंशी** 11

विरासत

आस्वादधर्मी आलोचक डॉ. आनंद प्रकाश दीक्षित — **मनोज पाण्डेय** — 12–20

हिंदी आलोचना की संस्कृति और आचार्य रामचंद्र शुक्ल — **रवि रंजन** — 21–32

डॉ. उदयनारायण तिवारी का भाषा विज्ञान को योगदान — **दानबहादुर सिंह** — 33–38

मीमांसा

दशम ग्रंथ में संस्कृति बोध — **हरीश अरोड़ा** — 39–57

भक्तिकालीन साहित्य का सामाजिक संदर्भ — **आभा गुप्ता ठाकुर** — 58–67

जातिगत संघर्ष से भारतीय राज्यों के पतन का ऐतिहासिक प्रत्याख्यान : गढ़ कुंडार — **श्याम नन्दन** — 68–73

मानस का चित्रकूट प्रसंग : एक विराट सांस्कृतिक बिंब — **शीताभ शर्मा** — 74–81

साहित्य की आत्म-सत्ता — **सर्वेश कुमार सिंह** — 82–94

साहित्य

अज्ञेय के काव्य में अलंकार धर्मिता — **प्रभात कुमार प्रभाकर** — 95–105

लीलाधर जगूड़ी के काव्य का व्यंग्यात्मक सत्य	दीपशिखा	106-116
स्त्री महत्वाकांक्षा और उसका शोषण : 'मैं और मैं' के परिप्रेक्ष्य में	मुकेश कुमार त्रिपाठी	117-124
संस्कृतियों के मध्य संवाद का सशक्त माध्यम : हिंदी का यात्रा साहित्य	नवीन नन्दवाना	125-137
हिंदी उपन्यासों के आइने में थर्डजेंडर	प्रियंका कुमारी गर्ग	138-147
नये प्रतिमानों के निर्माण और सामाजिक हस्तक्षेप की कविता (केदारनाथ सिंह की कविताएँ)	अनुशब्द	148-154
विस्थापन की समस्या और हिंदी साहित्य	प्रशान्त कुमार सिंह	155-162

विविध

शिकस्त पर फतह का परचम लहराते कृष्ण बलदेव वैद	दत्ता कोल्हारे	163-168
समकालीन समय की शिनाख्त करती कहानियाँ : 'सुरखाब के पंख' कहानी संग्रह के संदर्भ में	भारती	169-174
मैं कहता आँखिन देखी: प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल	अमित कुमार विश्वास	175-187

इस अंक के लेखक

सदस्यता फार्म

नये प्रतिमानों के निर्माण और सामाजिक हस्तक्षेप की कविता

[केदारनाथ सिंह की कविताएँ]

अनुशब्द

केदारनाथ सिंह ने अपनी कविताओं के लिए जिन प्रतीकों को चुना और उन प्रतीकों से जिन प्रतिमानों को गढ़ा, वह आधुनिक हिंदी कविता में उनको खास स्थान प्राप्त कराता है। प्रियतम के हाथ की तरह सुंदर और गर्म दुनिया का आकांक्षी कवि जब इस दुनिया के वास्तविक चेहरे को देखता है, तो वह एक ऐसे संवेदनहीन संसार को पाता है जिसे प्यार और सड़क के बीच फर्क करना नहीं आता, या जिसने इस फर्क को गैरजरूरी मानकर भुला दिया है। केदारनाथ सिंह 'फर्क नहीं पड़ता'[1] को अपने युग का मुहावरा बना लेने वाले समाज पर आक्रोशित हैं, अपनी कविता में इसी आक्रोश की सृजनात्मक और काव्यात्मक अभिव्यक्ति करते वे नजर आते हैं। इसलिए कई मायनों में उनकी कविता एक कवि की काव्यात्मक अभिव्यक्ति मात्र न होकर एक चेतना-युक्त, प्रज्ञासंपन्न, संवेदनशील मनुष्य का सामाजिक हस्तक्षेप है। इस सामाजिक हस्तक्षेप में चूल्हे की आँच, रोटी, बारिश, नदी, चाँद, पगडंडी, चौखट आदि उनके साथी बनते हैं और सर्वथा नये रूप में हम इनको केदार जी की कविता में पाते हैं। कभी प्रतीक तो कभी प्रत्यक्ष रूप में ये शब्द इनकी कविता में नजर आते हैं, परंतु इस साथी बनने और उपस्थिति दर्ज कराने की पूरी प्रक्रिया में उक्त शब्दों की अभिव्यक्ति हम जिस रूप में केदार जी के यहाँ पाते हैं वह हिंदी कविता में उसके पूर्व प्रयोग और उस प्रयोग से निर्मित प्रतिमानों को नकारती हुई अपनी समझ और व्याख्या के लिए नये सौंदर्यबोध की माँग करती है।

ध्यातव्य है कि हिंदी कविता में बारिश की सुंदर व्याख्या पहले भी हुई है परंतु जब कवि अपने प्रिय के आने के संदर्भ में लिखते हैं कि, "आना जैसे बारिश के बाद बबूल में आ जाते हैं नए-नए काँटे।"[2] तो एक पल को काँटे की चुभन ध्यान में नहीं आती अपितु बबूल में नये काँटों का उग आना उस अवश्यंभावी घटना-सा मालूम पड़ता है जिसका घटित होना बारिश के बाद लाजमी है। शायद कवि अपनी प्रिय के आने में भी कोई शक की गुंजाइश नहीं छोड़ना चाहते। इसी कविता की पहली पंक्ति में जब कवि लिखते हैं कि, "आना जब समय मिले।"[3] तो यह एक सामान्य-सी पंक्ति